राजस्थान का इतिहास

राजस्थान इतिहास के प्रमुख शिलालेख

Dr. Manish Shrimali
Assistant Professor
MLSU

- अभिलेख सम्बन्धी अभिलेख सम्बन्धी प्रमाण भी पुरातत्त्व के अन्तर्गत हैं जो पाषाण की पट्टियों, स्तम्भों, शिलाओं, ताम्रपत्रों, दीवारों, मूर्तियों एवं प्रतिमाओं पर खुदे हुए मिलते हैं। इसमें संस्कृत और राजस्थानी भाषा प्रयुक्त हुई है । इनमें से कई तो साहित्यिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्व के हैं। वे गद्य और पद्य में हैं अभिलेख अधिकतर महाजनी लिपि या हर्षकालीन लिपि में खोदे गये हैं। इन अभिलेखों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वे दान या विजय के स्मारक हैं, अथवा प्रशस्ति या मृत्यु घटना के द्योतक हैं। तिथियाँ स्थापित करने एवं ऐतिहासिक घटनाओं तथा साहित्यिक स्थिति को समझने में इनकी सहायता असामान्य है।

सांमोली शिलालेख (646 ई.)

उदयपुर के दक्षिण में भोमट क्षेत्र में सामोली गाँव से संस्कृत भाषा में लिखा यह शिलालेख मिला है, जो वर्तमान में अजमेर के पुरातत्त्व-संग्रहालय में सुरक्षित है। यह लेख मेवाड़ के गुहिल राजा शिलादित्य के समय (646 ई.) का है । इस शिलालेख से मेवाड़ के गुहिल वंश के काल निर्धारण तथा उस समय की आर्थिक एवं साहित्यिक स्थिति का पता चलता है। इसमें लिखा है कि शत्रुओं को जीतने वाला, देव, ब्राह्मण और गुरुजनों को आनंद देने वाला और अपने कुलरूपी आकाश का चन्द्रमा राजा शिलादित्य पृथ्वी पर विजयी हो रहा है। इस शिलालेख से स्थानीय भीलों पर शिलादित्य का प्रभाव स्थापित होना, देश-विदेश से व्यापारियों का इस क्षेत्र में बसना, मन्दिरों का निर्माण होना, जीविका के साधनों की वृद्धि होना आदि संकेत मिलते हैं।

अपराजित का शिलालेख (661 ई.)

- यह शिलालेख नागदा के पास कुंडेश्वर के मंदिर में पड़ा हुआ था जहाँ से डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने इसे विक्टोरिया हॉल (अजमेर) के संग्रहालय में सुरक्षित रखवाया | इस लेख से गुहिल शासक अपराजित के बारे में जानकारी मिलती है। इससे पता चलता है कि अपराजित ने वराह सिंह जैसे शक्तिशाली व्यक्ति को परास्त कर अपने अधीन रखा और फिर उसे अपना सेनापति नियुक्त किया। इस प्रशस्ति की रचना दामोदर ने की और इसे यशोभट ने उत्कीर्ण किया।

चीरवा का शिलालेख (1273 ई.)

- यह शिलालेख उदयपुर से 13 कि.मी. दूर चीरवा गाँव के मंदिर के बाहरी द्वार पर लगा हुआ है। यह लेख वागेश्वरी की आराधना से आरम्भ होता है। इसमें गुहिलबंशीय शासकों पद्मसिंह, जैत्रसिंह, तेजसिंह और समर सिंह की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। इसमें जैत्रसिंह के पराक्रम की प्रशंसा करते हुए मालवा,गुजरात, मारवाड़, जांगलदेश की राजनीतिक स्थिति का भी वर्णन किया गया है। यह लेख तत्कालीन ग्राम्य-व्यवस्था, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति पर भी प्रकाश डालता है। लेख में एकलिंगजी के अधिष्ठाता पाशुपत योगियों और मंदिर की व्यवस्था का भी उल्लेख है । इसी के साथ चैत्रगच्छ के कुछ आचार्यों का भी वर्णन मिलता है, जिसमें भद्रेश्वर सूरि, सिद्धसेन सूरि, जिनेश्वरसूरि, विजयसिंह सूरि और भुवनसिंह सूरि प्रमुख हैं। भुवनसिंह सूरि के शिष्य रत्नप्रभसूरि ने चीरवा शिलालेख की रचना की और केलिसिंह ने उसे उत्कीर्ण करवाया।

नाडोल का लेख (1141 ई.)

- यह लेख नाडोल (पाली) के सोमेश्वर मंदिर में लगा हुआ है। इसकी भाषा गद्यमय संस्कृत तथा लिपि नागरी है। इसमें महाराजाधिराज श्री रायपालदेव का उल्लेख है। इस लेख से स्थानीय शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है। इसके द्वारा बड़े नगरों तथा गाँवों के विभाजन का पता चलता है और यह भी स्पष्ट होता है कि गाँव के प्रत्येक भाग से प्रतिनिधियों की एक समिति होती थी जो गाँव की व्यवस्था से सम्बन्धित कार्य करती थी। इस समिति का जो भी निर्णय होता था, उसकी स्वीकृति नगर या गाँव के निवासियों द्वारा दी जाती थी इससे पता चलता है कि बारहवीं शताब्दी में ग्रामीण व्यवस्था में पूर्ण लोकतंत्र स्थापित था।

बिजौलिया शिलालेख (1170 ई.)

यह शिलालेख बिजौलिया गाँव के पार्श्वनाथ मंदिर के समीप एक चट्टान उत्कीर्ण है। इसमें सांभर और अजमेर के चौहान वंश की सूची तथा उनकी उपलब्धियों की जानकारी मिलती है। इन शासकों को वत्सगोत्रीय ब्राह्मण कहा गया इस शिलालेख चौहान वंशावली में जयराज, विग्रहराज, चन्द्रराज, दुर्लभराज, गोविन्दराज, चन्द्रराज, गुवक, वाक्पतिराज, विन्ध्य राज, विग्रहराज, गोविन्द सिंह, दुर्लभराज, पृथ्वीराज, अजयराज, अर्णोराज आदि के नाम दिये गये हैं। इसमें कई प्राचीन स्थानों के नाम, जाबालिपुर नाडोल (नाडोल) शाकम्भरी (सांभर), दिल्ली का (दिल्ली), श्रीमल (भीनमाल), मंडलकर (माँडलगढ़) विंध्यवल्ली (बिजौलिया), नागहद (नागदा) आदि नाम मिलते हैं। इस प्रशस्ति का रचयिता गुणभद्र था तथा गोविन्द ने इसको उत्कीर्ण किया।

बीठू का लेख (1273 ई.)

- पाली से 20 कि.मी. उत्तर पश्चिम में बीठू गाँव के पास यह लेख मिला है। इस नेख से पता चलता है कि राव सीहा सेतकुँवर का पुत्र था और 1273 ई. में स्वर्ग सिधार या । इस लेख से सीहा की मृत्यु तिथि निश्चित होती है तथा मारवाड़ के राठौड़ों के आदिपुरुष राव सीहा के चरित्र पर भी प्रकाश पड़ता है।

बीकानेर प्रशस्ति (1594 ई.)

- बीकानेर दुर्ग के द्वार के पार्श्व में लगी, यह प्रशस्ति बीकानेर महाराजा रायसिंह (1574-1612 ई.) के समय की है। इसकी भाषा संस्कृत है । इससे बीकानेर दुर्ग के निर्माण की जानकारी मिलती है। इस प्रशस्ति से हमें राव बीका से रायसिंह तक बीकानेर के शासकों की उपलब्धियों का ज्ञान होता है । रायसिंह को अनेक विजय प्राप्त करने वाला बताने के साथ-साथ कवि, विद्याप्रेमी और विद्वानों का आश्रयदाता भी बताया गया है। शिलालेख का रचयिता 'जैता' नामक एक जैन मुनि था।

राज प्रशस्ति (1676 ई.)

- मेवाड़ के महाराणा राजसिंह (1652-80 ई.) ने अकाल के समय प्रजा को राहत पहुंचाने के लिए राजसमन्द नामक विशाल झील का निर्माण करवाया था इस राजसमन्द झील की पाल पर 25 पाषाण पट्टिकाओं पर यह प्रशस्ति उत्कीर्ण है । संस्कृत भाषा में पद्यों में लिखी इस प्रशस्ति का रचयिता रणछोड़ भट्ट था एवं इसे गजधर, मुकुन्द, अर्जुन, सुखदेव, केशव, सुन्दर, लालो, लखो आदि कारीगरों ने उत्कीर्ण किया। प्रत्येक पाषाण पट्टिका के प्रारम्भ में पद्यों में देवस्तुति दी गई है और फिर मेवाड़ राजवंश के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख किया गया है। प्राचीन शासकों के नाम भाटों की वंशावलियों पर आधारित है। बापा, कुम्भा, साँगा, प्रताप आदि शासकों की उपलब्धियों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। 1615 ई. की मेवाड़ मुगल संधि का भी इसमें उल्लेख किया गया है। जगतसिंह के दान एवं महाराणा राजसिंह व औरंगजेब के सम्बन्धों का विस्तार से वर्णन किया गया है। महाराणा राजसिंह के सार्वजनिक कार्यों, पुण्य कार्यों तथा विजयों का वर्णन भी इसमें मिलता है। यह प्रशस्ति सत्रहवीं शताब्दी के मेवाड़ की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, तकनीकी तथा आर्थिक स्थिति के बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध करवाती है।

संदर्भ

- राजस्थान का इतिहास (गोपीनाथ शर्मा)
- राजस्थान का इतिहास (शर्मा, पावा)
- राजस्थान इतिहास एवं संस्कृति encyclopedia